कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 05 अगस्त, 2026

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में सेब का प्रभावी विकल्प बन रही है कीवी बागवानी

शुभम कंडवाल[1*] और मंजू

[1]शोधार्थी, वीर चंद्र सिंह गढ़वाली, उत्तराखंड औद्यानिकी और वानिकी विश्वविद्यालय, भरसार, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

[2]सहायक प्राध्यापक, वीर चंद्र सिंह गढ़वाली, उत्तराखंड औद्यानिकी और वानिकी विश्वविद्यालय, भरसार, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

***E-mail: kandwalsubham861@gmail.com**

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के कारण पारंपरिक समशीतोष्ण फल फसलों, विशेषकर सेब, की उत्पादकता एवं गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। ऐसी परिस्थितियोंमें कीवी एक उच्च मूल्यवान एवं जलवायु-अनुकूल फल फसल के रूप में उभर रही है। कम शीत संचयन अवधि, उच्च पोषण मूल्य, बेहतर बाजार मांग तथा आकर्षक आर्थिक प्रतिफल के कारण कीवी बागवानी किसानों के मध्य तेजी से लोकप्रिय हो रही है और इसकी व्यावसायिक खेती का विस्तार निरंतर बढ़ रहा है। उपयुक्त जलवायु एवं मृदा परिस्थितियों के साथ-साथ विभिन्न सरकारी प्रोत्साहन योजनाएँ उत्तराखंड में कीवी बागवानी के विकास एवं क्षेत्रीय विस्तार को सशक्त आधार प्रदान कर रही हैं। फलस्वरूप, कीवी बागवानी राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि विविधीकरण, किसानों की आय संवर्धन तथा सतत बागवानी विकास के लिए एक प्रभावी एवं संभावनाशीलविकल्प के रूप में स्थापित हो रही है।

परिचय

कीवी फल, जिसका वानस्पतिक नाम ऐक्टिनिडिया डेलिसियोसा है, एक महत्वपूर्ण समशीतोष्ण फल फसल है। प्रारंभ में इसे "चाइनीज गूजबेरी" के नाम से जाना जाता था, क्योंकि इसकी उत्पत्ति चीन में मानी जाती है। हालांकि, इसका व्यावसायिक विकास एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार सर्वप्रथम न्यूजीलैंड में किया गया। वर्ष 1960 तक विश्व के अधिकांश देशों में यह फल "चाइनीज गूजबेरी" के नाम से ही प्रसिद्ध था, लेकिन अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से न्यूजीलैंड ने इसका नाम बदलकर "कीवी" रख दिया, जो वहाँ के राष्ट्रीय पक्षी "कीवी" पर आधारित है। इसके बाद यह फल विश्वभर में "कीवी" नाम से लोकप्रिय हो गया और इसकी व्यावसायिक खेती एवं व्यापार में तेजी से विस्तार हुआ।

भारत में कीवी फल का सर्वप्रथम परिचय वर्ष 1960 में हुआ, जब इसे बेंगलुरु के प्रसिद्ध लालबाग उद्यान में एक शोभाकारी पौधे के रूप में लगाया गया। वर्तमान समय में कीवी भारत की एक उभरती हुई उच्च आर्थिक महत्व वाली समशीतोष्ण फल फसल के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रही है। वर्तमान में इसकी व्यावसायिक खेती मुख्यतः हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड तथा मेघालय के पर्वतीय एवं उप-पर्वतीय क्षेत्रों में की जा रही है, जहाँ की जलवायु एवं मृदा परिस्थितियाँ इसकी सफल खेती के लिए अत्यंत अनुकूल हैं। बाजार में कीवी फल की बढ़ती मांग, आकर्षक मूल्य तथा उच्च पोषण गुणों के कारण किसान इसकी बागवानी की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। अधिक आर्थिक लाभ एवं बेहतर बाजार संभावनाओं के कारण कीवी बागवानी उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों के लिए आय एवं रोजगार का एक महत्वपूर्ण साधन बनती जा रही है।

चित्र सं. 1: कीवी फल के फूल एवं फल

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव एवं वर्तमान स्थिति

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में सेब एक प्रमुख समशीतोष्ण फल फसल के रूप में लंबे समय से उगाया जाता रहा है। राज्य के उत्तरकाशी, चमोली, पिथौरागढ़, नैनीताल, अल्मोड़ा तथा देहरादून

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 05 अगस्त, 2026

जनपदों के उच्च एवं मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में सेब की व्यावसायिक बागवानी व्यापक रूप से की जाती है। यह फसल हजारों किसानों की आजीविका एवं आय का प्रमुख स्रोत रही है। हालांकि, विगत कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के कारण सेब उत्पादन गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। बढ़ते तापमान, कम हिमपात, अनियमित वर्षा तथा मौसमीय अस्थिरता के कारण सेब की उत्पादकता एवं फल गुणवत्ता गिरावट देखी जा रही है। विशेष रूप से मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में पर्याप्त शीत संचयन अवधि "चिलिंग ऑवर्स" की कमी के कारण पुष्पन, फलन एवं फल विकास प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रहा है। साथ ही, रोग एवं कीटों के बढ़ते प्रकोप से उत्पादन लागत में वृद्धि तथा उपज में अस्थिरता देखी जा रही है। इसके अतिरिक्त, जंगली जानवरों एवं पक्षियों द्वारा बागानों को पहुँचाई जाने वाली क्षति भी एक गंभीर चुनौती बनकर उभरी है। बंदर, लंगूर, जंगली सूअर, काकड़ तथा विभिन्न पक्षी प्रजातियाँ फलों, पौधों एवं नवविकसित कलियों को नुकसान पहुँचाकर उत्पादन एवं उत्पादकता को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही हैं, जिससे किसानों को उल्लेखनीय आर्थिक हानि का सामना करना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास एवं भोजन स्रोतों में हो रहे परिवर्तनों ने मानव-वन्यजीव संघर्ष को और अधिक बढ़ा दिया है। इन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप किसान अब ऐसी वैकल्पिक फल फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं, जो बदलती जलवायु परिस्थितियों के प्रति अधिक अनुकूलन क्षमता रखते हुए स्थिर उत्पादन, बेहतर गुणवत्ता तथा उच्च आर्थिक प्रतिफल प्रदान कर सकें।

कीवी बागवानी का बढ़ता महत्व एवं उत्तराखंड में इसकी संभावनाएँ

वर्तमान समय में कीवी बागवानी उत्तराखंड सहित हिमालयी क्षेत्रों में एक उभरती हुई उच्च मूल्य फल फसल के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रही है। अपने उत्कृष्ट पोषण गुणों, आकर्षक स्वाद तथा स्वास्थ्यवर्धक विशेषताओं के कारण इसकी बाजार मांग निरंतर बढ़ रही है। इसमें विटामिन-सी, विटामिन ई, फाइबर, पोटैशियम, तांबा तथा एंटीऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं। इन पोषक तत्वों के कारण कीवी फल प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाने, पाचन क्रिया में सुधार करने तथा अनेक रोगों की रोकथाम में सहायक माना जाता है।

स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता एवं पौष्टिक फलों की बढ़ती मांग के परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं के बीच इसकी लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है, जिससे किसानों को बेहतर बाजार मूल्य एवं अधिक आर्थिक प्रतिफल प्राप्त हो रहा है।

बदलती जलवायु परिस्थितियों में, जब पारंपरिक समशीतोष्ण फल फसलें अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं, कीवी एक उपयुक्त एवं लाभदायक विकल्प के रूप में सामने आई है। सेब की तुलना में इसे कम शीत संचयन अवधि (लगभग 700-800 घंटे) की आवश्यकता होती है तथा यह मध्य हिमालयी क्षेत्रों की परिवर्तित जलवायु परिस्थितियों में भी संतोषजनक उत्पादन देने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त, रोग एवं कीटों का प्रकोप अपेक्षाकृत कम होने से इसकी खेती का प्रबंधन सरल एवं आर्थिक रूप से लाभकारी सिद्ध होता है। परिणामस्वरूप उत्तराखंड के अनेक पर्वतीय क्षेत्रों में किसान कीवी बागवानी को तेजी से अपना रहे हैं। यह फसल न केवल कृषि विविधीकरण को प्रोत्साहित कर रही है, बल्कि किसानों की आय वृद्धि, रोजगार सृजन तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। वर्तमान परिस्थितियों में कीवी बागवानी उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु-स्मार्ट, आर्थिक रूप से लाभकारी एवं टिकाऊ बागवानी प्रणाली के रूप में स्थापित हो रही है, जो क्षेत्र की बागवानी आधारित अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान करने की क्षमता रखती है।

कीवी उत्पादन हेतु उपयुक्त जलवायु एवं मृदा

कीवी की सफल खेती के लिए अनुकूल जलवायु एवं उपयुक्त मृदा का चयन अत्यंत आवश्यक है। सामान्यतः कीवी के पौधों का रोपण जनवरी माह में करना उपयुक्त माना जाता है। इसके लिए ठंडी एवं समशीतोष्ण जलवायु अनुकूल होती है, जबकि अधिक गर्मी तथा तेज हवाएँ फसल के लिए हानिकारक सिद्ध होती हैं। पौध रोपण के समय तापमान लगभग 15° सेल्सियस के आसपास होना चाहिए, जबकि ग्रीष्मकाल में तापमान 30° सेल्सियस से अधिक नहीं होना चाहिए। फलन के समय 5 से 7° सेल्सियस तापमान की उपस्थिति पौधों के लिए लाभकारी मानी जाती है।

कीवी की खेती के लिए गहरी, उपजाऊ, दोमट तथा हल्की अम्लीय मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है। पौधों की बेहतर वृद्धि एवं उच्च उत्पादन के लिए मृदा का पीएच मान 5.0-6.0 के बीच होना उपयुक्त माना जाता है। रोपण से पूर्व मृदा की जाँच कर लेना आवश्यक है, जिससे पोषक तत्वों की उपलब्धता एवं पीएच संतुलन सुनिश्चित किया जा सके। पौध रोपण के लिए गड्ढों में बालू, उपजाऊ मिट्टी एवं सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाकर भरने से मृदा की संरचना में सुधार होता है, जल निकास बेहतर बना रहता है तथा पौधों की प्रारंभिक वृद्धि एवं जड़ विकास सुदृढ़ होता है।

कीवी की प्रमुख किस्में

भारत में कीवी की प्रमुख किस्मों में एलिसन, हेवर्ड, ब्रूनो, मोंटी टॉमुरी, मटुआ तथा गोल्डन कीवी आदि शामिल हैं। इनमें हेवर्ड एवं एलिसन किस्में अपनी उच्च उत्पादन क्षमता, उत्तम फल गुणवत्ता तथा बेहतर बाजार मूल्य के कारण सबसे अधिक लोकप्रिय मानी जाती हैं।

कीवी पौधों का प्रवर्धन

कीवी के पौधों का प्रवर्धन मुख्यतः कायिक विधियों द्वारा किया जाता है, जिनमें कटिंग (कलम) एवं ग्राफ्टिंग प्रमुख हैं। चूँकि कीवी एक द्विगृही पौधा है, जिसमें नर एवं मादा पौधे अलग-अलग होते हैं, इसलिए व्यावसायिक बागवानी में उच्च गुणवत्ता एवं अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु श्रेष्ठ मादा पौधों का कायिक प्रवर्धन किया जाता है। इस विधि द्वारा तैयार पौधों में मातृ पौधे के गुण सुरक्षित रहते हैं तथा पौधे अपेक्षाकृत कम समय में फलन अवस्था में पहुँच जाते हैं।

कलमों द्वारा प्रवर्धन कीवी पौध तैयार करने की एक सरल, प्रभावी एवं व्यापक रूप से अपनाई जाने वाली विधि है। इस विधि में शीत ऋतु के दौरान पौधों की छंटाई के समय स्वस्थ, रोगमुक्त एवं

परिपक्व टहनियों से हार्ड वुड कलम तैयार की जाती है। सामान्यतः 15-20 सेमी लंबी कलम, जिसमें 3-4 सक्रिय कलिकाएँ (नोड्स) हों, उपयुक्त मानी जाती है। इन कलमों को बालू, मिट्टी एवं जैविक खाद के मिश्रण से तैयार नर्सरी बेड अथवा पॉलीबैग में लगाया जाता है। बेहतर एवं शीघ्र जड़ विकास के लिए रूटिंग हार्मोन का प्रयोग लाभकारी माना जाता है, जिससे पौधों की जीवितता एवं प्रारंभिक वृद्धि में सुधार होता है।

ग्राफ्टिंग विधि का उपयोग मुख्यतः मजबूत, स्वस्थ एवं उच्च गुणवत्ता वाले कीवी पौधे तैयार करने हेतु किया जाता है। इस विधि में बीज से तैयार रूटस्टॉक पर उन्नत किस्म के पौधे की टहनी (सायन) को संयोजित किया जाता है। कीवी में सामान्यतः टंग ग्राफ्टिंग एवं क्लेफ्ट ग्राफ्टिंग विधियाँ अधिक प्रचलित हैं। इस तकनीक द्वारा तैयार पौधों में बेहतर वृद्धि, अधिक जीवितता, शीघ्र फलन तथा उच्च उत्पादन क्षमता पाई जाती है, जिससे व्यावसायिक बागवानी में गुणवत्तायुक्त एवं स्थिर उत्पादन प्राप्त होता है।

पौध रोपण एवं ट्रेलिस (सहारा) प्रणाली

कीवी एक बेलदार फल फसल है, इसलिए इसकी उचित वृद्धि, विकास एवं उच्च उत्पादन के लिए वैज्ञानिक विधि से पौध रोपण एवं उपयुक्त ट्रेलिस (सहारा) प्रणाली का प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्यतः पौधों को 4-6 मीटर की उचित दूरी पर लगाया जाता है, ताकि पौधों को पर्याप्त प्रकाश एवं वायु संचार प्राप्त हो सके। पौध रोपण के लिए प्रायः 1 × 1 × 1 मीटर आकार के गड्ढे तैयार किए जाते हैं। इन गड्ढों को भरते समय ऊपरी उपजाऊ मिट्टी में 25-30 किलोग्राम अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद तथा आवश्यकतानुसार उर्वरकों का मिश्रण मिलाया जाता है, जिससे पौधों की प्रारंभिक वृद्धि एवं जड़ों के समुचित विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध हो सकें।

चित्र सं. 2: कीवी फल के लिये ट्रेलिस प्रणाली

कीवी बेलों को उचित सहारा प्रदान करने एवं उन्हें व्यवस्थित रूप से विकसित करने के लिए ट्रेलिस प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इनमें "टी बार" ट्रेलिस प्रणाली सर्वाधिक प्रचलित एवं प्रभावी मानी जाती है। इस प्रणाली में लगभग 1.8-2.0 मीटर ऊँचे खंभों के शीर्ष पर 'टी' आकार की संरचना स्थापित की जाती है, जिस पर तारों का जाल बनाकर बेलों को फैलाया जाता है। इससे पौधों को पर्याप्त प्रकाश एवं वायु संचार प्राप्त होता है, जिससे फलधारण क्षमता में वृद्धि होती है तथा फल की गुणवत्ता एवं उत्पादन में सुधार होता है।। उच्च उत्पादकता, संतुलित पौध संरचना एवं गुणवत्तायुक्त फल उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए व्यावसायिक कीवी बागवानी में "टी बार" ट्रेलिस प्रणाली को व्यापक रूप से अपनाया जाता है।

सिंचाई, खाद एवं पोषण प्रबंधन

कीवी पौधों की उचित वृद्धि एवं उच्च उत्पादन के लिए संतुलित सिंचाई एवं पोषण प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। कीवी की जड़ें सतही होती हैं, इसलिए पौधों को नियमित रूप से नमी की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से ग्रीष्म ऋतु एवं फल विकास की अवस्था में पर्याप्त सिंचाई करना आवश्यक होता है। वर्तमान समय में आधुनिक ड्रिप सिंचाई प्रणाली को अधिक प्रभावी माना जाता है, क्योंकि इससे जल की बचत होने के साथ-साथ पौधों को आवश्यक मात्रा में नमी निरंतर उपलब्ध होती रहती है।

पौधों की स्वस्थ वृद्धि एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादन के लिए संतुलित पोषण प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। सामान्यतः कीवी पौधों में रोपण के समय से लेकर प्रारंभिक 5 वर्षों तक प्रति वर्ष लगभग (500 ग्राम) नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश युक्त उर्वरक मिश्रण, जिसमें लगभग 40 प्रतिशत नाइट्रोजन, 30 प्रतिशत पोटाश तथा फास्फोरस सम्मिलित हो, प्रयोग किया जाता है। रोपण के पाँच वर्ष बाद पूर्ण विकसित पौधों में प्रति वर्ष लगभग (1 किलोग्राम) नाइट्रोजन, (0.5 किलोग्राम) फास्फोरस तथा (1 किलोग्राम) पोटाश का प्रयोग करने से बेहतर वृद्धि, उच्च फलन एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सूक्ष्म पोषक तत्वों का संतुलित प्रबंधन पौधों की वृद्धि, फल विकास एवं फल गुणवत्ता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

फल तुड़ाई एवं उपज

कीवी फल सामान्यतः रोपण के 3-4 वर्ष बाद फल देना प्रारंभ कर देता है, जबकि पूर्ण उत्पादन अवस्था लगभग 7-8 वर्ष में प्राप्त होती है। फल पकने पर उसका आकार पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है तथा टी.एस.एस. (टोटल सॉल्युबल सॉलिड्स) की मात्रा उपयुक्त स्तर पर पहुँच जाती है, जो तुड़ाई के लिए उपयुक्त अवस्था मानी जाती है। सामान्यतः उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में कीवी फलों की तुड़ाई अक्टूबर से नवंबर माह के बीच की जाती है।

फल तुड़ाई के समय फलों को सावधानीपूर्वक तोड़ना आवश्यक होता है, ताकि उनकी गुणवत्ता एवं भंडारण क्षमता प्रभावित न हो। उचित समय पर तुड़ाई करने से फलों का स्वाद, आकार, रंग एवं बाजार गुणवत्ता बेहतर बनी रहती है। अच्छी प्रबंधन परिस्थितियों में विकसित कीवी बागों से उच्च गुणवत्ता वाले फलों का पर्याप्त उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, जिससे किसानों को अच्छा आर्थिक लाभ मिलता है। सामान्यतः यदि किसान लगभग 50 नाली (लगभग 1 हेक्टेयर) क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि से कीवी की खेती करते हैं, तो वे प्रतिवर्ष लगभग 10-15 लाख रुपये तक की आय

प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही कीवी फल में भंडारण क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है। फलों को ठंडे एवं शुष्क स्थान अथवा शीत भंडारण में लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे उनकी विपणन अवधि बढ़ जाती है तथा किसानों को उचित समय पर बेहतर बाजार मूल्य प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चित्र सं. 3: परिपक्व कीवी फलों की तुड़ाई

सरकारी योजनाएँ एवं प्रोत्साहन

कीवी बागवानी को प्रोत्साहित करने हेतु केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। उत्तराखंड में उद्यान विभाग द्वारा किसानों को गुणवत्तायुक्त पौध सामग्री, बागवानी उपकरण, सिंचाई सुविधाओं तथा ट्रेलिस/सहारा प्रणाली की स्थापना हेतु लगभग 70-80 प्रतिशत तक अनुदान (सब्सिडी) उपलब्ध कराई जा रही है। इससे किसानों को कीवी बागवानी स्थापित करने में आर्थिक सहायता मिल रही है तथा प्रारंभिक लागत का भार भी कम हो रहा है।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय बागवानी मिशन एवं मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर जैसी योजनाओं के माध्यम से कीवी बागवानी के विस्तार, पौधशाला विकास, सिंचाई प्रबंधन एवं आधुनिक तकनीकों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। किसानों को उन्नत बागवानी तकनीकों, पौध प्रबंधन, कटाई-छंटाई, पोषण प्रबंधन एवं रोग-कीट नियंत्रण संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने हेतु समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ एवं कृषक भ्रमण आयोजित किए जाते हैं। इन योजनाओं एवं प्रोत्साहनों के परिणामस्वरूप उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में किसान तेजी से कीवी बागवानी को अपना रहे हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि होने के साथ-साथ बागवानी आधारित कृषि प्रणाली को भी मजबूती मिल रही है।

निष्कर्ष

वर्तमान परिस्थितियों में जलवायु परिवर्तन के कारण उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में पारंपरिक सेब उत्पादन अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसी स्थिति में कीवी बागवानी एक प्रभावी, लाभकारी एवं टिकाऊ विकल्प के रूप में उभर रही है। अनुकूल जलवायु, बढ़ती बाजार मांग, उच्च पोषण मूल्य तथा बेहतर आर्थिक प्रतिफल के कारण कीवी की खेती किसानों के लिए आय एवं रोजगार का महत्वपूर्ण साधन बनती जा रही है। यदि वैज्ञानिक बागवानी तकनीकों, संतुलित पोषण प्रबंधन, आधुनिक सिंचाई प्रणाली तथा उचित प्रशिक्षण एवं प्रबंधन को अपनाया जाए, तो कीवी बागवानी उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस प्रकार कीवी बागवानी भविष्य में उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में सेब के एक सफल एवं टिकाऊ विकल्प के रूप में स्थापित हो सकती है।

●●●